SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"श्री अरविन्द का शैक्षिक चिन्तन"

त्रिपुरारी दूबे
पी–एच0 डी0, शोध छात्र
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गोण्डा
डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या, उ0प्र0

शोध–सार

श्री अरविन्द को योगदर्शन की पुनर्स्थापना करने व आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसकी पुनर्व्याख्या करने हेतु याद किया जाता है। उनका दर्शन अनुभवातीत सर्वांग योग दर्शन के नाम से अभिहित किया जाता है, क्योंकि उन्होंने योग दर्शन के किसी एक विचार को स्वीकार न करके सत्य तक पँहुचने के लिए विभिन्न मार्गों को एक समरूप, समजातीय तथा समन्वित रूप में बाँधकर देखने का प्रयत्न किया। सर्वांगीणता के साथ–साथ श्री अरविन्द केवल इन्द्रियानुभव को सर्वोच्च ज्ञान नहीं मानते, अपितु उसे सबसे निम्न कोटि का ज्ञान मानते हैं।

उनके अनुसार ज्ञान की अनेक कोटियाँ हैं और सर्वोच्च कोटि आध्यात्मिक अनुभूति है। जिसे वस्तुतः इस जगत से प्राप्त किया जा सकता है। यह जगत रूपी ज्ञान ही श्री अरविन्द के शिक्षा का आधार है। शिक्षा के सन्दर्भ में अरविन्द जी लिखते हैं–

"बालक की शिक्षा उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली, सर्वाधिक अंतरंग और जीवन पूर्ण है, उसको अभिव्यक्ति करने वाली होनी चाहिए। मनुष्य की क्रिया और विकास जिस सांचे में ढ़लनी चाहिए वह उसके अंतरंग गुण और शक्ति का सांचा है। उसे नई वस्तुएँ अवश्य प्राप्त करनी चाहिए, परन्तु वह उसको सर्वोत्तम रूप से और सबसे अधिक प्राणमय रूप में स्वयं अपने विकास, प्रकार और अंतरंग शक्ति के आधार पर प्राप्त करेगा।"

श्री अरविन्द : एसेज ऑन द गीता, 1948, पृष्ठ संख्या–319

श्री अरविन्द शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग के रूप में अन्तःकरण को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार अन्तःकरण में बिना किसी अन्य माध्यम के ज्ञान की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। श्री अरविन्द के अनुसार– "मस्तिष्क को ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता, जो कि बालक में सुप्त ज्ञान के रूप में पहले से ही विद्यमान न हो।"

श्री अरविन्द के अनुसार– शिक्षक "इन्स्ट्रक्टर" नहीं है। उसका कार्य अपने आप को समझने में छात्र की सहायता करना है। उसका कार्य तथ्यों का प्रस्तुतीकरण नहीं है परन्तु मार्गदर्शन करना है। चूँकि तथ्यात्मक जानकारी से सच्ची शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि क्रियात्मक एवं रचनात्मक शक्तियों का विकास करके उसे लक्ष्य की ओर प्रेरित किया जा सकता है।

श्री अरविन्द का शैक्षिक चिन्तन न तो प्राचीन भारतीय आदर्शों के प्रति पलायन है, न पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण। उनमें दोनों ही विचारधाराओं का समन्वय मिलता है। आज हमारी शिक्षा प्रणाली में इस समन्वयात्मक विचार को अपनाने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना

महान योगी श्री अरविन्द घोष का जन्म कलकत्ता में दिनांक 15 अगस्त, 1872 ई0 को हुआ। श्री अरविन्द के पिता व प्रसिद्ध डॉ0 श्री कृष्णघन घोष पाश्चात्य विचारों से प्रभावित थे। इसलिए इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम के स्कूल लोरेटो कान्वेन्ट से प्रारम्भ हुई, आगे इन्होंने इंग्लैण्ड से उच्च शिक्षा प्राप्त कर सन् 1893 में भारत लौटने का फैसला किया। भारत आकर ये बड़ौदा कालेज में शिक्षक बन गये। सन् 1905 ई0 में बंगाल विभाजन के देश व्यापी विरोध के कारण राष्ट्रीय प्रेम से ओतप्रोत होकर नौकरी छोड़ दी। बाद में उन्होंने वन्दे मातरम् एवं युगान्तर पत्रों के सम्पादन का कार्य भी किया। राजनैतिक गतिविधियों में लिप्त होने के कारण इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। बाद के वर्षों में आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए सन् 1910 में आप पाण्डिचेरी चले गये जहाँ उन्होंने आध्यात्मिक केन्द्र की स्थापना की। जो आगे चलकर अरविन्द आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शेष जीवन इसी आश्रम में व्यतीत करते हुए इन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की। दिनांक 05 दिसम्बर 1950 को इस महायोगी ने इस संसार को त्यागकर दिव्यलोक में प्रस्थान किया।

श्री अरविन्द गीता के अनन्य भक्त थे। इन्होंने गीता के कर्मयोग एवं ध्यानयोग की वैज्ञानिक व्याख्या की, तथा मानव व दिव्य शक्ति के संयोग को ही योग की संज्ञा दी है। श्री अरविन्द मानव को योग द्वारा अमरत्व की अनुभूति कर ब्रह्म में लीन होने का उपदेश नहीं देते थे, ये तो इसके द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति को अज्ञान, अन्धकार और मृत्यु से ज्ञान,– प्रकाश, और अमरत्व की ओर ले जाना चाहते थे। इसलिए इनकी विचारधारा को सर्वांग योग दर्शन कहा जाता है। श्री अरविन्द के दार्शनिक व शैक्षणिक सिद्धान्त इसी सर्वांग योग दर्शन पर आधारित हैं।

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का सम्प्रत्यय– यद्यपि श्री अरविन्द के जीवन का क्षेत्र योग साधना का था। परन्तु इस योग दर्शन को मानव की दिव्य अनुभूति का साधन मानने के कारण ये एक दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध हुए। अपने इन्हीं दार्शनिक सिद्धान्तों जो कि सर्वांग योग दर्शन पर आधारित है, को मानव जीवन में उतारने के लिए इन्हें एक विशेष प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता महसूस हुई। इसलिए आगे चलकर इन्होंने शिक्षा की एक अलग राष्ट्रीय योजना प्रस्तुत की, जो इनके द्वारा रचित दो पुस्तकों "नेशनल सिस्टम ऑफ एजुकेशन" और "ऑन एजुकेशन" में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन वस्तुतः ब्रह्मचर्य, आध्यामिक साधना और योग पर आधारित है। इनके अनुसार ऐसी शिक्षा जिसमें ये तीनों तत्व पाये जाते हैं। उस शिक्षा से मनुष्य का पूर्ण विकास हो सकता है। वे

अन्तःकरण को शिक्षा का प्रमुख अंग मानते हैं। इन्होंने अन्तःकरण के चार स्तर बताये हैं– चित, मनस, बुद्धि एवं ज्ञान। इनके अनुसार शिक्षा का मुख्य कार्य अन्तःकरण की शक्तियों का विकास करना है। श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा मात्र ज्ञान की प्राप्ति नहीं है, वरन् शिक्षा वह है जो मानव की छिपी हुई शक्तियों का विकास करके उसको पूर्ण विकसित करती है। इस शिक्षा को ये समग्र शिक्षा (Integral Education) की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार श्री अरविन्द के अनुसार– "सच्ची और वास्तविक शिक्षा वही है, जो मानव की अन्तर्निहित समस्त शक्तियों को इस प्रकार विकसित करती है, कि वह उनसे पूर्ण रूप से लाभान्वित होता है।"

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य– श्री अरविन्द प्रचलित शिक्षा को वास्तविक शिक्षा नहीं मानते थे, क्योंकि उनके अनुसार यह केवल सूचनाओं का समूह है। अरविन्द ने कहा है कि "सूचनाओं का संग्रह मात्र ही शिक्षा नहीं है।" क्योंकि सूचनाएँ ज्ञान की नींव नहीं हो सकती हैं, वे अधिक से अधिक सामग्री हो सकती हैं जिसके द्वारा जानने वाला अपने ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। वह शिक्षा जो अपने को ज्ञान तक सीमित रखती है। वह शिक्षा नहीं है। जीवन की आवश्यकतानुसार शिक्षा की व्यवस्था का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा है कि सच्ची शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नहीं होना चाहिए, बल्कि उसको मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण अथवा विकास करना चाहिए। इस प्रकार श्री अरविन्द के शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिए–

1– श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक/मनुष्य के शरीर का पूर्ण एवं शुद्ध विकास करना है क्योंकि इनका मानना है कि शरीर से ही धर्म व कर्म की साधना संभव है। अतः शरीर का सबल रहना आवश्यक है।

2– श्री अरविन्द का मानना है कि ज्ञानेन्द्रियाँ ही ज्ञान की प्रमुख स्रोत होती हैं इसलिए इनको प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इनके अनुसार ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग तथा वस्तुओं का पूर्ण रूप से निरीक्षण होना चाहिए। ताकि बालकों में विभिन्न प्रतिभाओं को समझने की शक्ति आ सके। उन्होंने लिखा है कि "शिक्षक का मुख्य कार्य है, कि बालकों में इन्द्रियों के उचित प्रयोग का विकास करना। शिक्षक को यह देखना चाहिए कि प्रयोग न होने के कारण ये इन्द्रियाँ अविकसित न रह जायें।

3– श्री अरविन्द का मानना है कि शिक्षा में बालक की रूचियों एवं अभिरूचियों के आधार पर उनकी सभी मानसिक शक्तियों का विकास करना चाहिए। अरविन्द ने मानसिक शक्तियों में स्मृति, चिन्तन, तर्क, कल्पना, निर्णय को विशेष स्थान दिया है।

4– बालकों में नैतिकता का विकास करना भी श्री अरविन्द शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। इनका मानना है कि मस्तिष्क के साथ–साथ हृदय की शिक्षा भी बालकों को दी जानी चाहिए। नैतिकता के विकास के लिए भावनाएं या सवेंग, संस्कार एवं प्रकृति या स्वभाव को पुष्ट कर बालक के हृदय को प्रशिक्षित करना चाहिए।

5– अति मानस अर्थात मनुष्य का अन्तःकरण मानव विकास का मुख्य सोपान है। अतः अन्तःकरण का विकास करना ही अरविन्द शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानते हैं। अन्तःकरण के चारों स्तरों चित्, बुद्धि, मन तथा अन्तर्ज्ञान का विकास करके ही व्यक्ति को पूर्ण मानव बनाया जा सकता है।

6– श्री अरविन्द के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में व्याप्त दैवीय अंश को शिक्षा के द्वारा खोजकर, विकसित करके उसे पूर्णतः की ओर ले जाना चाहिए। उनका कहना है कि "शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए–विकसित होने वाली आत्मा का विकास करना, जो उसमें सर्वोत्तम है उसे व्यक्त करना तथा उसे श्रेष्ठ कार्य के लिए पूर्ण बनाना।"

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा की पाठ्यचर्या– श्री अरविन्द के अनुसार पाठ्यक्रम रूचिपूर्ण एवं बालकों को आकृष्ट करने वाले होने चाहिए। ये पाठ्यक्रम बालकों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाये जाने चाहिए तथा इनका सम्बन्ध जीवन की वास्तविक क्रियाओं से हो। पाठ्यक्रम ऐसा हो, जो, विश्वज्ञान में बालकों में रूचि पैदा कर सके तथा इसमें उन विषयों को शामिल किया जाना चाहिए, जिससे बालक का आध्यात्मिक और भौतिक विकास हो। उपर्युक्त सिद्धान्त के अनुपालन हेतु बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए अरविन्द ने विभिन्न स्तरों पर निम्नांकित पाठ्यक्रम का होना स्वीकार किया है।

1– **प्राथमिक स्तर–** मातृभाषा, अंगेजी, फ्रेंच, सामान्य विज्ञान, गणित, चित्रकला, खेलकूल, सामाजिक अध्ययन आदि।

2– **माध्यमिक स्तर–** मातृभाषा, अंगेजी, फ्रेंच, गणित, चित्रकला, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भू–गर्भ विज्ञान आदि।

3– **उच्च स्तर या विश्वविद्यालय स्तर–** अंगेजी, फ्रेंच साहित्य, भारतीय व पाश्चात्य दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध व विश्व एकीकरण आदि।

4– **व्यवसायिक शिक्षा–** लघु एवं कुटीर उद्योग की शिक्षा, इंजीनियरिंग एवं नर्सिंग की शिक्षा, संगीत, नृत्य व टंकण व आशुलिपि की शिक्षा।

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षण विधि– श्री अरविन्द के अनुसार छात्रों को इस बात का अभ्यास होना चाहिए कि वे आवश्यकतानुसार अपने मस्तिष्क को सक्रिय अथवा निष्क्रिय बना सकें। समग्र शिक्षा के लिए उन्होंने क्रमिक विधि का समर्थन किया है। इसमें बालक को एक समय में एक या दो विषयों की शिक्षा दी जाती है, उसमें पारंगत होने पर अन्य विषयों की शिक्षा उसी क्रम में दी जाती है। इस पद्धति में निम्न सिद्धान्तों का पालन आवश्यक है–

1– बालक को उसकी रूचि के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

2– बालक को उसकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाये।

3– छात्रों को स्वप्रयत्न व स्वानुभव से सीखने पर बल दिया जाना चाहिए।

4– रटने के स्थान पर समझने पर बल दिया जाना चाहिए।

5– बालकों को स्वयं करके सीखने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए।

6– बालकों के साथ प्रेम व सहानुभूति पूर्वक शिक्षा देना चाहिए तथा उन्हें अपना कार्य करने की स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिए।

7– शिक्षण के समय शिक्षक को छात्रों से अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

8– शिक्षक को बालक के मनोविज्ञान का ध्यान रखकर उसकी आत्मा के पूर्ण विकास हेतु प्राकृतिक अवसर दिये जाने चाहिए।

श्री अरविन्द के अनुसार अनुशासन– श्री अरविन्द बालकों में प्राकृतिक अनुशासन के पक्षधर हैं। अरविन्द बालकों के लिए अच्छी संगति का समर्थन करके उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने का अवसर देने के पक्ष में हैं। श्री अरविन्द की दृष्टि से वास्तविक अनुशासन आन्तरिक होता है। अतः ये प्रभावात्मक व नैतिक अनुशासन को बालकों में विकसित करने हेतु शिक्षकों द्वारा आदर्श प्रस्तुत करने को श्रेष्ठ मानते हैं।

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षक व शिक्षार्थी– श्री अरविन्द ने अपनी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को पथ प्रदर्शक व सहायक के रूप में स्थान दिया है। इनके अनुसार शिक्षक को बालक की रूचि, उसके मनोविज्ञान व उसकी क्षमता के अनुसार शिक्षा प्रदान करना चाहिए। शिक्षक के लिए इनका कथन है कि "शिक्षक निर्देशक या स्वामी नहीं है, वह सहायक व पथ प्रदर्शक है, उसका कार्य सुझाव देना है न कि कार्य को लादना।" इस प्रकार शिक्षक छात्र को ज्ञान न देकर बल्कि उसे ज्ञान प्राप्त करने में मदद प्रदान करता है। श्री अरविन्द बालक को शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र मानते हैं। इस मामले में वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के समर्थक हैं। इनके अनुसार बालक एक आत्मा लेकर पैदा होता है। इसमें समस्त ज्ञान अन्तर्निहित होता है। यह अपने आप में पूर्ण होती है तथा इस पूर्ण ज्ञान की अनुभूति तभी होती है जब वह ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एकाग्रचित्त होकर ध्यान करे। वे छात्रों को ऐसे पर्यावरण में रखने के पक्षधर थे जिससे उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ विकसित व प्रशिक्षित हों तथा वे सत्य की खोज की ओर अग्रसर हो सकें।

श्री अरविन्द के अनुसार विद्यालय व परीक्षा – श्री अरविन्द के अनुसार विद्यालय बालकों की भौतिक प्रगति व योग साधना के केन्द्र होने चाहिए। जिसके माध्यम से बालक अपना भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सकें। अरविन्द बिना किसी भेदभाव के सभी बालकों को उनकी योग्यता के अनुसार प्रवेश देने व अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति के अध्ययन हेतु सुविधाएँ प्रदान करने के पक्षधर हैं। इनके अनुसार विद्यालय का वातावरण विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत प्रोत होना चाहिए। "श्री अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र" इसी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था का एक जीता जागता उदाहरण है। सह शिक्षा संस्था के रूप में स्थापित शिक्षा केन्द्र में शिशु शिक्षा से उच्च शिक्षा व अनुसंधान तक की व्यवस्था है। चूँकि श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य अनन्त शक्ति की प्राप्ति है। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति वह शिक्षा की मुक्ति प्रणाली के द्वारा करना चाहते हैं, श्री अरविन्द के विद्यालय में किसी भी स्तर पर किसी भी प्रकार की परीक्षा नहीं होती है और न ही कोई प्रमाण–पत्र दिया जाता है। छात्रों को शिक्षकों की संस्तुति पर ही आगे के अध्ययन में प्रवेश दिया जाता है।

उपसंहार

श्री अरविन्द मानते थे, कि भौतिकवाद प्रभावी होने के कारण लोग अपनी भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं को अक्षुण्य नहीं रख पा रहे हैं जिससे उनके अन्दर का दिव्य ज्योति पुंज बुझता सा जा रहा है। अरविन्द उस समय देश में प्रचलित विदेशी शिक्षा के खिलाफ थे। वे चाहते थे कि शिक्षा वही बेहतर है जो भारत की आत्मा तथा भारत की वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं के अनुकूल हो। उनकी सम्पूर्ण शिक्षा की अवधारणा सर्वांग योग दर्शन पर आधारित है। इनकी शिक्षा प्रणाली में सभी विषयों की शिक्षा, रटने पर बल न देकर समझने पर बल देना, प्राकृतिक व प्रभावात्मक अनुशासन, शिक्षक एक सहायक व पथ प्रदर्शक के रूप में, शिक्षा में सभी को समान अवसर आदि ऐसे गुण हैं जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अभी भी प्रासंगिक हैं। परन्तु इनकी शिक्षा की मुक्त प्रणाली वर्तमान औपचारिक व व्यवस्थित शिक्षा की विरोधी है। अतः इसे जनशिक्षा का आधार नहीं बनाया

जा सकता है जिसमें ये योग या साधना द्वारा शिक्षा प्राप्त करने पर बल देते हैं। इसके बावजूद इनकी शिक्षा व्यवस्था में जिस बाल मनोविज्ञान व मूल्य शिक्षा को महत्व दिया गया है वह अद्भुत है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. त्यागी, गुरसरन दास, (2020), ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।
2. लाल, रमन बिहारी, (2017–18), शिक्षा के दार्शनिक आधार, आर0 लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, 250001।
3. लाल, रमन बिहारी, (2009), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, गंगोत्री, शिवाजी रोड, मेरठ, 250002।
4. ओड, डॉ0 एल0 के0, शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, संस्करण–2019, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. पाण्डेय, राम सकल, शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि, संस्करण 2014–15, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
6. लाल, प्रो0 रमन बिहारी, विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक, आर0 लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, निकट राजकीय इण्टर कालेज, मेरठ।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/08

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

त्रिपुरारी दूबे

For publication of research paper title

"श्री अरविन्द का शैक्षिक चिन्तन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com